ज़िंदगी ही नशा है।

नशा!, नशा का क्या मतलब है!?
कुछ भी हो सकता है। जिस तरह लोग उसे इस्तमाल करना चाहते हैं ~~क~~ यह शब्द वैसे ही अपना मतलब बदल देता है। कभी लोग इसे बुरी तरह से इस्तमाल करते हैं। कभी नहीं, ~~कभी~~ अक्सर लोग इस शब्द को बुरा ही मानते हैं। जैसे ही किसी ने ~~क~~ "नशा" कहा, तो कहते हैं वो गलत है। पता नहीं क्यों। नहीं पता लोग क्यूँ 'नशा' शब्द बुरी तरह इसमाल करते हैं। यह अच्छा भी तो हो सकता है। या फिर हम इसे अच्छा बना सकते हैं। जैसे; संगीत को, नृत्य को, रचना को, या फिर खुद ज़िंदगी को, जहाँ हम यह सब करते हैं।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

लोग कहते हैं नशा एक बार करने से भी हम उसके ग़ुलाम बन जाते हैं। क्यों न हम अपने ज़िंदगी को ही नशा मानकर उसे इस्तमाल करें। किसी ने कहा है, "छोटी सी तो ज़िंदगी है, जब तक जीयो, खुशी से जीयो, खुलकर जीयो।" जिसने भी कहा हो सच कहा। ऊपर वाले ने हमें ज़िंदगी दी है तो हम उसे बरबाद क्यों करें।

अब वैसे लोगों का कहना है कि "यह सब सिर्फ कहने की बातें हैं, असल में ऐसा कुछ नहीं होता।" मैं भी कहाँ कह रही हूँ कि जीना आसान है। मैं ऐसे कहूँगी भी नहीं। पता है मुझे, मैं उम्र में कच्ची हूँ यानी छोटी हूँ, लेकिन मुझे इतना ज़रूर पता है कि ज़िंदगी जैसी आसान दिखती है, वैसी है नहीं।

Item Code: 948 Participant Code: 113

हम सब क्या करते हैं, हम अपनी ज़िंदगी कैसी होनी चाहिए इसके बारे में ज़रूर सोचते हैं। जैसे, मैं ~~वह~~ बड़ी होकर यह करूँगी, मैं वो खरीदूँगा, मैं ~~वह~~ यह बनूँगी आदी। मैं यह नहीं कह रही हूँ की हमें यह सब नहीं करनी चाहिए। करनी चाहिए ज़रूर करनी चाहिए लेकिन यह भी नहीं भूलना चाहिए न कि 'कैसे करना चाहिए'। हम सब ~~यह~~ यह छोटी सी पर ज़रूरी बात हमेशा भूल जाते हैं। ~~तो~~ जब अगली बार जब कुछ करोगे तो ज़रा सोचके करना।

लेकिन हर चीज़ सोचके भी तो नहीं किया जा सकता। कुछ चीज़ें सोचे बिना ही हो जाती हैं। यही सोच रहे होंगे न की अभी- ~~अभी~~ अभी तो मैंने कहा की 'सोचके करना चाहिए'। मैंने यह थोड़ी कहा था सब

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

कुछ सोचके करना चाहिए। नहीं न, कुछ चीज़े अपने आप हो जाते हैं कभी वो गलत हो सकता है, कभी सही भी।

ज़िंदगी की सड़क पे कुछ भी हो सकता है। कभी जल्दी आगे बड़ जाते है तो कभी हम पीछे रह जाते हैं। कभी जहाँ से आये थे वहाँ वापस जाना पड़ता है तो कभी सीधा अपने मंज़िल पर पहूँच जाते हैं। अब कहाँ जाना है कैसे जाना है ये सब अपने हाथ में हैं। इस रास्ते में कई लोग मिलेंगे। कुछ लोग आधी रास्ते पर हाथ छोड़ देते हैं, कुछ लोग कस के पकड़ते हैं ऐसे जैसे छुड़ाना चाहे तोह भी न छूटे।

सब ने सुना होगा "हमें अपनी ज़िंदगी को गंभीरता से लेना चाहिए।" या फिर "ज़िंदगी और अपने आप

को एक खुले पतंग की तरह छोड़ दो।"
हर किसी के विचार धारा अलग होते हैं।
लोग जो भी कहें, अपनी ज़िंदगी
अपने हिसाब से जीयो। इसका यह
मतलब नहीं की कुछ भी करदो। ऐसे
चीज़े करो जो हमारे मन को खुशी दे।
जिसे हमें खुश देख कर हमारे अपने
भी ~~खुश~~ खुश हो जाए। जैसे जब हमें
अपने जीवन में गंभीरता दिखाना चाहिए
तब दिखाओ गंभीरता और जब खुले पतंग
बनना है, बनो खुले पतंग। मजाल है किसी
की जो आपको रोके।

अब यह सब पढ़के लग रहा होगा
की मैं तो ऐसे ही ज़िंदगी को मुश्किल
कह रही थी। पर ऐसी बात नहीं
है। जैसी असली सड़क होते हैं न, वैसे
ही ज़िंदगी के सड़क में भी रुकावटें
आते हैं। दुरघटनाएँ होते हैं। गड्ढे भी
पड़ते हैं। गाड़ी खराब भी हो

जाता है। पता है मेरी क्या मानना है, जो इन सभी चीज़ों से डरते है या फिर रुख जाते है, वो कमज़ोर है। हाँ, कभी-कभी तेज़ बढ़ाने केलिए भी रुकना पड़ता है, लेकिन रुकने वाले आगे भी तो बढ़ते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी होते है जो हमेशा रोज़ एक ही सड़क से बार-बार गुज़रते है। कुछ अलग करने की कोशिश नहीं करते। लोग अपने ज़िंदगी में कुछ अलग करने केलिए समय नहीं ढूँड पाते, यह लोग तब भी वही सब करते है जो वह रोज़ करते है। अपने जीवन और काम के प्रति निष्ठावान रहना अच्छी बात है। इन सब के साथ-साथ कुछ अलग भी करके देख लो शायद आपको वह भी पसंद आ जाए।

Item Code: 948 Participant Code: 113

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिसे अपनी ज़िंदगी की कोई परवाह नहीं होती। अपनी जीवन की गाड़ी जहाँ जाए उन्हें इस चीज़ से कोई फरक नहीं पड़ता। खुली सोच और स्वभाव का होना अच्छी बात है। ~~लेकिन~~ ऐसा करने से खुशि तो मिल जाएगी। लेकिन बिना ज़िंदगी की खुशी किस बात की।

जैसे मैंने शुरुवात में बताई थी, कि 'नशा' शब्द को लोग बुरा मानते हैं, वो आखिर क्यों मानते हैं? चलो, मैं ही बता देती हूँ। कुछ लोग या फिर यह कहूँ के आज कल के बच्चें और जवान ~~खुशी~~ ज़िंदगी की खुशी में नशा ढूंढने के बजाय नशे में ज़िंदगी की खुशी ढूँडते हैं और यह नशा बिल्कुल अच्छी नहीं होती।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 948 Participant Code: 113

यह नशा शुरूवात में खुशी तो देती है पर बाद में पचतावा होती है। कभी-कभी पचताने के लिए ज़िंदगी ही बाकी नहीं होती। यह नशा किसी भी चीज़ का हो सकता है, शराब, ~~दवाई~~, हेरोइन, कोकेन कुछ भी। ~~लेकिन~~ इन चीज़ों का इस्तमाल हमारी ज़िंदगी को आगे मंज़िल पर नहीं बल्की क़बर ~~के~~ ~~आकर~~ के रास्ते ले जाएगी। जिसे अपनी ज़िंदगी प्यारी हो यह रास्ता ~~कि~~ बिल्कुल नहीं चुनना चाहेगा।

~~ज़िंदगी की सफ़र की रास्ता लंबी है~~। हर कोई जान-बूचकर इस रास्ते पे नहीं चल पड़ता। कुछ लोग किसी के कहा मानकर या गलती से भी गिर जाते हैं। ये लोग चाहे तो उस ~~क~~ गड्डे से निकल सकते हैं। आसान नहीं होगा। यह हमें वापस खींचेगी पर गिरना नहीं। बस कोशिश करते

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki! So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

रहना | यह बिल्कुल मत समझना अकेले कि तुम अकेले हो | निष्ठा सच्ची है तो तुम्हारे अपने भी होंगे साथ में |

जब से हम सब ने साँस लेना शुरू की है, तब से हम सब ज़िंदगी की सफर में चल पड़े हैं | रास्ता लंबा है | रास्ते में कई सारे मोड़ हैं और आगे भी | गड्ढे हैं, रुकावटें हैं और बहुत कुछ है | लेकिन रुकना नहीं | क्योंकि ज़िंदगी भी एक नशा ही तोह है और नशे का क्या है, अगर एक बार लत लग गई तो निकलना तो मुश्किल है |

ऐसे ही ज़िंदगी को अपना नशा बनाकर जीके देखो फिर कभी भी उसमें आने वाली मुश्किलों को मुश्किल नहीं पाओगे |

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Item Code: 948 Participant Code: 113

कभी भी अपने ज़िंदगी को ~~ख~~ ख़तम करने की विचार नहीं आएँगे। कभी भी अपने कोशि~~शि~~शों को रोकने का विचार नहीं आएँगे। अगर ~~मुश~~ मुश्किल चट्टान बनकर भी सामने आए न तो उसे भी पार करने की हिम्मत आ जाएगी। बस अपने ज़िंदगी ~~स~~ को गले लगाकर उसे जीकर तो देखो। क्या पता हमें ~~फिर~~ ~~एक और मौका~~ अपने ज़िंदगी से ही प्यार हो जाए। ज़िंदगी हमें हमेशा दूसरा मौका नहीं देती। इसलिए क्यों न हम इसकी शुरूवात आज ही करें। "कल करें सो आज करें, आज करें सो अब।"